

भारत सरकार
जल शक्ति मंत्रालय
पेयजल एवं स्वच्छता विभाग

लोक सभा
अतारांकित प्रश्न सं. 3222
दिनांक 20.03.2025 को उत्तर दिए जाने के लिए

आंध्र प्रदेश में ओडीएफ के अंतर्गत अपशिष्ट प्रबंधन

3222. डॉ. दग्गुबाती पुरंदेश्वरी:

क्या जल शक्ति मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) क्या आंध्र प्रदेश में वर्ष 2024 के दौरान खुले में शौच मुक्त (ओडीएफ) का दर्जा प्राप्त करने वाले लाभार्थियों की संख्या संबंधी आंकड़ा उसके शर्तमुक्त अनुदान के हिस्से के रूप में एकत्र किया गया है और यदि हां, तो तत्संबंधी व्यौरा क्या है;
- (ख) घरेलू अपशिष्ट, विशेषकर मानव मल और मल अपशिष्ट के प्रबंधन और शोधन पर व्यौरा क्या है;
- (ग) क्या इन निधियों ने नए सामुदायिक स्तर के अपशिष्ट प्रबंधन कार्यक्रम शुरू किए हैं और यदि हां, तो तत्संबंधी व्यौरा क्या है;
- (घ) वर्ष 2024 में अपशिष्ट प्रबंधन के लिए उपयोग की जाने वाली नई तकनीकों का व्यौरा क्या है; और
- (ङ) राज्य द्वारा विगत दो वर्षों और वर्तमान वर्ष के दौरान उपयोग की गई निधियों का वर्ष-वार व्यौरा क्या है?

उत्तर

राज्य मंत्री, जल शक्ति
(श्री वी. सोमण्णा)

(क): वर्ष 2024-25 के दौरान एसबीएम (जी) कार्यक्रम के अंतर्गत 36235 व्यक्तिगत पारिवारिक शौचालयों (आईएचएचएल) और 1257 सामुदायिक स्वच्छता परिसरों (सीएससी) का निर्माण किया गया।

(ख): अब तक 1751 गांवों की 8 शहरी मलीय कीचड़ शोधन संयंत्रों (एफएसटीपी) से मैपिंग की गई। वर्ष 2024-25 के दौरान प्रति जिले के लिए 2 इकाइयों की दर से 52 मोबाइल शोधन इकाइयों (एमटीयू) की खरीद करने की योजना है और यह खरीद प्रक्रियाधीन है।

(ग): ठोस अपशिष्ट प्रबंधन (एसडब्ल्यूएम) के अंतर्गत, अब तक 10858 ठोस अपशिष्ट प्रसंस्करण केन्द्रों (एसडब्ल्यूपीसी) का निर्माण किया गया है और परिवारों से कचरे के एकत्रण और एसडब्ल्यूपीसी तक इसकी ढुलाई के लिए परिवहन वाहन उपलब्ध कराए गए हैं। घर-घर जाकर एकत्रीकरण नियमित आधार पर किया जा रहा है। ग्रेवाटर प्रबंधन (जीडब्लूएम) के तहत, एसबीएम (जी) के तहत 137 सामुदायिक सोख्ता गड्ढों का निर्माण किया गया। मनरेगा के अंतर्गत 773 सामुदायिक सोख्ता गड्ढों का निर्माण किया गया था। मनरेगा के अंतर्गत 47,615 व्यक्तिगत पारिवारिक सोख्ता गड्ढे निर्मित किए गए थे।

6 जिलों में 6 गोबरधन परियोजनाएं स्वीकृत की गई हैं और इनका कार्य प्रगति पर है। 258 प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन (पीडब्लूएम) इकाइयां स्थापित की गई हैं और 449 गांवों की मैपिंग की गई है।

(घ): पारिवारिक और सामुदायिक दोनों स्तरों पर ग्रेवाटर के प्रभावी प्रबंधन के लिए सुझावात्मक तकनीकें अनुबंध-। में दी गई हैं।

(ङ) विगत दो वर्षों और चालू वर्ष के दौरान राज्य द्वारा उपयोग की गई निधियों का वर्ष-वार व्यौरा निम्नानुसार है:

योजना/कार्यक्रम	करोड़ रुपये में		
	2022-23	2023-24	2024-25
एसबीएम-जी:	290.34	290.03	227.51
15वां वित्त आयोग:	0	468.31	543.46
मनरेगा	225.61	977.65	43.35
	515.95	1735.99	814.32

दिनांक 20.03.2025 को उत्तर के लिए नियत लोक सभा अतारांकित प्रश्न सं 3222 के उत्तर
के भाग (घ) में उल्लिखित विवरण

परिवारिक और सामुदायिक दोनों स्तरों पर ग्रेवाटर के प्रभावी प्रबंधन के लिए सुझावात्मक तकनीकें

परिवारिक स्तर की तकनीकें

- क. **सोख गड्ढा:** एक साधारण संरचना जहां प्राकृतिक छनन को बढ़ावा देते हुए ग्रेवाटर को जमीन में रिसने दिया जाता है।
- ख. **लीच पिट:** सोखता गड्ढों के समान लेकिन ग्रेवाटर की बड़ी मात्रा से निपटने के लिए डिज़ाइन किया गया, जिससे प्रभावी जल निकासी और उपचार अनुमत हो पाता है।
- ग. **मैजिक पिट:** यह एक अभिनव दृष्टिकोण जिसमें खुले में छोड़े जाने से पहले ग्रेवाटर के शोधन को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न सामग्रियों के संयोजन का उपयोग किया जाता है।
- घ. **किचन गार्डन:** सिंचाई के लिए शोधित ग्रेवाटर का उपयोग, इस प्रकार पानी के पुनः उपयोग को बढ़ावा देना और खाद्य उत्पादन को बढ़ाना।

सामुदायिक स्तर की तकनीकें

- क. **सामुदायिक लीच पिट:** कई परिवारों के ग्रेवाटर के प्रबंधन के लिए एक साझा सुविधा, जिसे व्यक्तिगत परिवारिक बोझ को कम करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।
- ख. **अपशिष्ट स्थिरीकरण तालाब:** ऐसी प्रणाली जिसमें अवसादन और जैविक गतिविधि के माध्यम से अपशिष्ट जल के शोधन के लिए तालाबों में प्राकृतिक प्रक्रियाओं का उपयोग किया जाता है।
- ग. **निर्मित आर्द्धभूमि:** ऐसी अभियांत्रिकी प्रणाली है जिसमें पौधों और सूक्ष्मजीवों का उपयोग करके ग्रेवाटर के शोधन के लिये प्राकृतिक आर्द्धभूमि का प्रतिरूप तैयार किया जाता है।
- घ. **फाइटोरिड प्रौद्योगिकी:** ऐसी विशिष्ट प्रकार की निर्मित आर्द्धभूमि जिसमें अपशिष्ट जल को प्रभावी ढंग से छानने और शोधित करने के लिये पौधों की जड़ों का उपयोग किया जाता है।
- ड. **विकेन्द्रीकृत अपशिष्ट जल शोधन प्रणाली (डीवेट्स):** एक मॉड्यूलर अवधारणा जिसमें अपशिष्ट जल को उसके स्रोत के करीब शोधित किया जाता है, जिससे परिवहन आवश्यकताओं और संबंधित लागतों में कमी आती है।

च. **मृदा जैव प्रौद्योगिकी (एसबीटी):** ऐसी तकनीकें जिनमें प्राकृतिक जैविक गतिविधि का लाभ उठाकर सीवेज और उसके प्रवाह के शोधन के लिए मृदा आधारित प्रक्रियाओं का उपयोग किया जाता है।

परिवहन तंत्र

क. **बंद नालियां:** पर्यावरण में बिना दुष्प्रभाव के सुरक्षित रूप से ग्रेवाटर परिवहन के लिए डिज़ाइन की गई प्रणाली।

ख. **छोटी-बोर पाइप प्रणाली:** खुदाई और सामग्री के उपयोग को कम करके, छोटे व्यास के पाइपों का उपयोग करके ग्रेवाटर के परिवहन का एक अधिक कुशल तरीका।